

1. उच्च-उत्पादकता फसल विविधीकरण एवं बागवानी

संदर्भ

- केंद्रीय बजट 2026-27 में उच्च-उत्पादकता फसल विविधीकरण को गति देने के लिए तैयार किए गए एक **फसल-विशिष्ट, क्षेत्रीय रूप से विभेदित** कृषि नीति ढांचे पर बल दिया गया।
- पारंपरिक अनाज मोनोकॉपिंग (एकल फसल प्रणाली) से आगे बढ़ते हुए, यह कार्ययोजना भारत के विविध कृषि-जलवायु क्षेत्रों में उच्च-मूल्य वाली **बागवानी, बागान फसलों** और **कृषि वानिकी** को लक्षित करती है।

परिचय: यह क्या है?

फसल विविधीकरण का तात्पर्य पारंपरिक एकल कृषि प्रणालियों (विशेष रूप से अत्यधिक जल-उपभोग वाली धान-गेहूं चक्रीय प्रणाली) से कृषि भूमि के उपयोग को दलहन, तिलहन, बागवानी और वाणिज्यिक वृक्ष फसलों की ओर स्थानांतरित करना है। बागवानी इस उच्च-मूल्य परिवर्तन की आधारशिला के रूप में कार्य करती है, जो प्रति इकाई भूमि पर **उच्च सकल मूल्य वर्धन (GVA)** उत्पन्न करती है, जल उपयोग का अनुकूलन करती है और अनिश्चित मौसम के विरुद्ध जलवायु लचीलापन तैयार करती है।

प्रमुख मंक्रो रुझान और कृषि सांख्यिकी

- | | | | |
|--|--|---|---|
| 4.45%
दशकीय क्षेत्रीय विकास दर
(दशकों में सर्वोच्च) | ~37%
फसल उप-क्षेत्र GVO में
बागवानी का योगदान | 370.74 MT
कुल बागवानी उत्पादन
(2024-25 स्तर) | #2 वैश्विक
फल, सब्जी व आलू उत्पादन
में भारत का स्थान |
|--|--|---|---|
- **दशकीय क्षेत्रीय वृद्धि:** भारतीय कृषि ने **4.45%** की दशकीय विकास दर दर्ज की—जो पिछले दशकों की तुलना में सबसे अधिक है।
 - **उत्पादन विस्तार:** राष्ट्रीय बागवानी उत्पादन 2013-14 के 277.35 मिलियन टन से बढ़कर 2024-25 में **370.74 मिलियन टन** हो गया, जिसमें शामिल हैं:
 - ↳ **सब्जियों** 217.80 मिलियन टन (वैश्विक उत्पादन का 8.18%)
 - ↳ **फल** 117.65 मिलियन टन (वैश्विक उत्पादन में 9.18% हिस्सेदारी)
 - ↳ **अन्य** 35.29 मिलियन टन अन्य बागवानी और बागान फसलें
 - **वैश्विक स्थिति:** भारत फलों, सब्जियों और आलू के कुल उत्पादन में विश्व में दूसरे स्थान पर है। भारत **प्याज और शैलोट्स (shallots)** का दुनिया का सबसे बड़ा उत्पादक है, जो वैश्विक आपूर्ति का **22.42%** प्रतिनिधित्व करता है।

क्षेत्र-विशिष्ट उच्च-मूल्य फसल हस्तक्षेप

1. तटीय राज्य और द्वीप पारिस्थितिकी तंत्र (नारियल, काजू, कोको, चंदन)

- **आजीविका:** ~3 करोड़ लोग, ~1 करोड़ किसान जुड़े हैं।
- **वैश्विक स्थिति:** उत्पादन में विश्व में 2nd (~22.44%) और रकबे में 3rd (~19.32%)।
- **घरेलू आंकड़े (2024-25):** 2.19 MHa में 6.36 T/Ha उपज के साथ उत्पादन 13.97 MT पहुंचा।
- **राज्यों की स्थिति:** केरल (क्षेत्र 7.54 LHa, उत्पादन 35.44 L टन), TN कुल उत्पादन में अग्रणी, AP में उच्चतम प्रति हेक्टेयर उपज।
- **बजट 2026-27:** नारियल संवर्धन योजना (FPO द्वारा समर्थित, जीर्ण पेड़ों का उच्च-उपज किस्मों से प्रतिस्थापन)।

3. पहाड़ी और शीतोष्ण क्षेत्र (मेवांनट फसलें)

- **अखरोट अर्थव्यवस्था:** J&K वाणिज्यिक अखरोट उत्पादन में सबसे बड़ा योगदानकर्ता (साथ ही UK, HP, लद्दाख, अरुणाचल, मणिपुर)।
- **उत्पादन व व्यापार (2024-25):** उत्पादन 3.22 लाख टन; UAE, तुर्की, इराक, सिंगापुर, कतर, कुवैत में \$7.80 मिलियन का निर्यात।

2. पूर्वोत्तर क्षेत्र (अगरवुड और जैविक खेती)

- **संसाधन आधार:** जनवरी 2026 तक भारत में ~15 करोड़ अगरवुड पेड़ (एक्विलारिया प्रजाति), 90%+ पूर्वोत्तर कृषि वानिकी में।
- **वाणिज्यिक क्षमता:** अकेले त्रिपुरा में अगरवुड बाजार (चिप्स, ऊद तेल, बीड्स, चाय) का अनुमानित वार्षिक कारोबार **₹2,000 करोड़** है।
- **नीतिगत उत्प्रेरक:** असम व त्रिपुरा में भू-स्थानिक मानचित्रण, CITES तहत निर्यात कोटा विस्तार, DGFT डिजिटल एकीकरण।

4. सिंधु-गंगा के मैदान (पंजाब और हरियाणा)

- **रणनीतिक बदलाव:** अत्यधिक भूजल दोहन वाले धान के रकबे को दालों, तिलहनों और संरक्षित सब्जी की खेती में स्थानांतरित करना, ताकि मृदा कार्बन बहाल हो सके और गिरता भूजल स्तर स्थिर हो सके।

▶ विविधीकरण रणनीति का महत्व

- **कृषि आय में वृद्धि:** उच्च-मूल्य वाली बागवानी और बागान फसलें मूल्य-समर्थित मुख्य अनाजों की तुलना में प्रति हेक्टेयर काफी अधिक शुद्ध राजस्व मार्जिन उत्पन्न करती हैं।
- **जल और मृदा संरक्षण:** बाढ़-सिंचाई वाले धान के क्षेत्र को कम करने से उत्तर-पश्चिम में भूजल के अत्यधिक दोहन में कमी आती है, जबकि नाइट्रोजन-स्थिरीकरण करने वाली दालों को शामिल करने से मिट्टी की उर्वरता सुधरती है।
- **कृषि-प्रसंस्करण और मूल्य संवर्धन:** घरेलू खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों, कोल्ड चेन, सुगंधित निष्कर्षण और उच्च मार्जिन वाले इत्र उद्योग के लिए कच्चे माल की आपूर्ति का विस्तार।
- **निर्यात विस्तार:** 2030 तक **2 ट्रिलियन डॉलर** और 2047 तक **21 ट्रिलियन डॉलर** के राष्ट्रीय व्यापार लक्ष्यों के अनुरूप कृषि निर्यात को बढ़ावा देना।

▶ फसल विविधीकरण को विस्तार देने में चुनौतियाँ

- **मूल्य अस्थिरता और शीघ्र खराब होने की प्रवृत्ति:** खुली न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) खरीद द्वारा समर्थित गेहूँ और धान के विपरीत, जल्द खराब होने वाली बागवानी फसलें कटाई के बाद कीमतों में गिरावट के प्रति संवेदनशील रहती हैं और इनमें पर्याप्त बाजार हस्तक्षेप ढाँचे की कमी है।
- **कोल्ड-चेन और लॉजिस्टिक्स की कमी:** खेत स्तर पर प्री-कूलिंग सुविधाओं, कोल्ड स्टोरेज नेटवर्क और प्रशीतित परिवहन की कमी से फसल कटाई के बाद महत्वपूर्ण नुकसान होता है।
- **वृक्ष फसलों की लंबी परिपक्वता अवधि:** अगरवुड, चंदन और अखरोट जैसे बागान वृक्षों को वाणिज्यिक कटाई से पहले कई वर्षों की परिपक्वता अवधि की आवश्यकता होती है, जिससे छोटे किसानों के पास नकदी का संकट हो जाता है।
- **अनौपचारिक प्रसंस्करण और प्रमाणन अंतराल:** खंडित मूल्य श्रृंखलाएं, मानकीकृत गुणवत्ता ग्रेडिंग का अभाव और कड़े पादप-स्वच्छता (phytosanitary)/CITES निर्यात अनुमोदन अक्सर छोटे किसानों की प्रीमियम वैश्विक बाजारों तक पहुंच को सीमित करते हैं।

▶ आगे की राह

- **कृषि अवसंरचना कोष (AIF) के जरिए अवसंरचना को मजबूत करना:** ग्रामीण स्तर पर FPO द्वारा संचालित प्राथमिक प्रसंस्करण, छंटाई, ग्रेडिंग और कोल्ड स्टोरेज केंद्रों के लिए रियायती ऋण उपलब्ध कराना।
- **मूल्य न्यूनता भुगतान तंत्र (Price Deficiency Payment Mechanisms) का विस्तार:** फसल आवक के चरम समय के दौरान गैर-प्रमुख, उच्च-मूल्य वाली फसलों के लिए मूल्य स्थिरीकरण योजनाओं (जैसे पीएम-आशा और बाजार हस्तक्षेप निधि) का विस्तार करना।
- **गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्री का वितरण:** प्रमाणित रोग-मुक्त टिशू-कल्चर पौधों, उच्च-घनत्व वाली मेवा किस्मों और जलवायु-अनुकूल स्टार्टअप्स की आपूर्ति के लिए क्षेत्रीय नर्सरियों का आधुनिकीकरण करना।
- **मूल्य संवर्धन और क्लस्टर विकास को बढ़ावा:** प्राथमिक वस्तुओं को आवश्यक तेलों, पैकेज्ड मेवों और प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों में बदलने के लिए 'सूक्ष्म खाद्य प्रसंस्करण उद्यम औपचारिकीकरण योजना' (PMFME) के तहत क्लस्टर-आधारित कृषि-औद्योगिक केंद्रों का विस्तार करना।

▶ निष्कर्ष

केंद्रीय बजट 2026-27 का ढांचा यह स्वीकार करता है कि तटीय बागान फसलों, पूर्वोत्तर के सुगंधित उत्पादों से लेकर शीतोष्ण फलों के बगीचों तक—क्षेत्रीय कृषि-पारिस्थितिक ताकतें कृषि लाभप्रदता में सुधार की कुंजी हैं। लक्षित नर्सरी सुधार को फसल कटाई के बाद की कोल्ड चेन और सुव्यवस्थित निर्यात लॉजिस्टिक्स के साथ जोड़ना, फसल विविधीकरण को स्थायी ग्रामीण समृद्धि का मुख्य आधार बनाने के लिए आवश्यक होगा।

▶ मानक प्रस्तावना (Introduction)

भारतीय कृषि लंबे समय से हरित क्रांति की विरासत—धान-गेहूँ आधारित एकल फसल प्रणाली (Monoculture)—से उत्पन्न गंभीर भूजल दोहन, मृदा क्षरण और आय स्थिरता की चुनौतियों से जूझ रही है। कृषि उप-क्षेत्र के सकल उत्पादन मूल्य में बागवानी की लगभग 37% हिस्सेदारी और हाल के वर्षों में 4.45% की मजबूत क्षेत्रीय वृद्धि यह रेखांकित करती है कि फसल विविधीकरण अब केवल एक विकल्प नहीं, बल्कि कृषि लचीलेपन की अनिवार्यता है। केंद्रीय बजट 2026-27 द्वारा प्रस्तावित क्षेत्रीय एवं कृषि-पारिस्थितिक रूप से विभेदित दृष्टिकोण खाद्यसुरक्षा से आगे बढ़कर "पोषण सुरक्षा, जल दक्षता और उच्च मूल्य-वर्धन" की दिशा में रणनीतिक बदलाव का प्रतीक है।

▶ मानक निष्कर्ष (Conclusion)

संक्षेप में, फसल विविधीकरण की सफलता केवल उत्पादन बढ़ाने में नहीं, बल्कि उसे सुदृढ़ 'फार्म-टू-फोर्क' मूल्य श्रृंखला से जोड़ने में निहित है। इसके लिए अशोक दलवाई समिति की सिफारिशों के अनुरूप मूल्य न्यूनता भुगतान तंत्र (जैसे पीएम-आशा), AIF के तहत क्लस्टर-आधारित कोल्ड चेन और FPOs के सशक्तिकरण की आवश्यकता है। क्षेत्रीय ताकतों (जैसे पूर्वोत्तर में सुगंधित फसलें तथा तटीय क्षेत्रों में नारियल व काजू) का सतत उपयोग किसानों की आय दोगुनी करने के लक्ष्य को गति देगा और **SDG-2 (शून्य भुखमरी)** व **SDG-13 (जलवायु कार्रवाई)** की प्राप्ति में मील का पत्थर सिद्ध होगा।

🔥 मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

चर्चा कीजिए कि फसल पैटर्न में विविधीकरण और समायोजन किस प्रकार भारत में ग्रामीण गरीबों के जीवन पर सूखे के प्रभाव को कम कर सकता है। इस संबंध में सरकारों की भूमिका का भी परीक्षण कीजिए।

2. भारत के कौशल पारिस्थितिकी तंत्र की पुनर्कल्पना

सामान्य अध्ययन-2 (GS Paper II); विषय: स्वास्थ्य, शिक्षा, मानव संसाधनों से संबंधित सामाजिक क्षेत्र/सेवाओं के विकास और प्रबंधन से संबंधित मुद्दे।

प्रस्तावना

~7 करोड़ युवा

NEET श्रेणी में (15-29 आयु वर्ग)
(NSS 78वां दौर / नीति आयोग)

~28 वर्ष

भारत की राष्ट्रीय मध्यिका आयु
(समष्टि आर्थिक परिसंपत्ति)

~9 करोड़

कार्यशील आबादी से बाहर युवा
(संभावित GDP में नुकसान)

- नीति आयोग की रिपोर्ट, 'रीइमेजनिंग स्किलिंग फॉर विकसित भारत@2047' (एनएसएस 78वां दौर के आंकड़ों पर आधारित) के अनुसार, भारत में लगभग **7 करोड़ युवा** (आयु वर्ग 15-29) 'नीट' (NEET: शिक्षा, रोजगार या प्रशिक्षण से बाहर - Neither in Education, Employment, nor Training) की श्रेणी में आते हैं।
- यद्यपि भारत की कम मध्यिका आयु (~28 वर्ष) को एक प्रमुख समष्टि आर्थिक (macroeconomic) परिसंपत्ति माना जाता है, किंतु मुख्यधारा से अलग-थलग युवाओं का यह विशाल वर्ग इंगित करता है कि संरचनात्मक सुधारों के अभाव में हमारा 'जनसांख्यिकीय लाभांश' (Demographic Dividend), 'जनसांख्यिकीय दायित्व' (Demographic Liability) में बदलने के जोखिम का सामना कर रहा है।

अवधारणा: कौशल पारिस्थितिकी तंत्र की पुनर्कल्पना

भारत के कौशल पारिस्थितिकी तंत्र की पुनर्कल्पना का अर्थ है—**डिग्री-केंद्रित शिक्षा से हटकर उद्योग-उन्मुख, व्यावसायिक शिक्षा की ओर बढ़ना।** इसके अंतर्गत स्कूली स्तर से ही कौशल विकास को शामिल करना, शिक्षता (Apprenticeship) को मुख्यधारा में लाना और जनसांख्यिकीय क्षमता को उत्पादक रोजगार में बदलने के लिए उच्च-विकास वाले क्षेत्रों को लक्षित करना शामिल है।

भारतीय संदर्भ में NEET की चुनौती की व्याख्या

- **व्यापक दायरा:** पारंपरिक बेरोजगारी दर केवल काम की सक्रिय तलाश करने वालों की गणना करती है, जबकि NEET में निराश होकर पढ़ाई छोड़ चुके युवा, वर्षों तक प्रतियोगी परीक्षाओं के चक्रव्यूह में फंसे अभ्यर्थी और पूरी तरह से अवैतनिक घरेलू कार्यों में संलग्न व्यक्ति भी शामिल होते हैं।
- **"डबत लागत" (Sunk Cost) का संकट:** लाखों युवाओं के पास औपचारिक डिग्रियां हैं, परंतु उनमें बाजार की मांग के अनुरूप प्रासंगिक कौशल नहीं हैं। शिक्षा पर पारिवारिक बचत खर्च करने के बाद, वे कम पारिवारिक आय और रोजगार-अयोग्यता के दोहरे बोझ का सामना करते हैं।
- **आर्थिक आघातों के प्रति संवेदनशीलता:** औपचारिक शिक्षा और रोजगार संस्थानों से बाहर रहने के कारण यह वर्ग कौशल हास (deskilling), गरीबी के दुष्चक्र और आर्थिक अस्थिरता के प्रति अत्यधिक संवेदनशील हो जाता है।

संकट के बहुआयामी पहलू

1. आर्थिक प्रभाव

- **GDP में गिरावट:** ~9 करोड़ युवाओं के बाहर रहने से उपभोग व प्रति व्यक्ति आय पर चोट।
- **उच्च निर्भरता:** निष्क्रिय युवा कमाने वाले वृद्धों पर वित्तीय दबाव बढ़ाते हैं।
- **उप-इष्टतम प्रतिफल:** संवेदन रोजगार न मिलने पर निवेशित पूंजी नकारात्मक प्रतिफल देती है।

2. सामाजिक एवं लैंगिक आयाम

- **लैंगिक असमानता:** रुढ़ियों, बाल-विवाह, सुरक्षा चिंताओं व अवैतनिक कार्यों से NEET में बहुतायत महिलाओं की हैं।
- **मानसिक स्वास्थ्य:** मनोवैज्ञानिक तनाव, आत्मविश्वास की कमी व चिंता (anxiety)।
- **अशांति का जोखिम:** बेरोजगार युवाओं के अशांति की ओर मुड़ने का जोखिम।

3. शैक्षणिक एवं शासन संबंधी

- **डिग्री-कौशल असंतुलन:** व्यावहारिक दक्षताओं के बजाय सैद्धांतिक रटत विद्या को प्राथमिकता।
- **NEP क्रियान्वयन अंतराल:** कक्षा 6 से व्यावसायिक शिक्षा का क्रियान्वयन राव्यों में असंगत है।
- **भर्ती बाधाएं:** बार-बार पेपर लीक व मुकदमों से करियर में वर्षों का अंतराल।

संरचनात्मक कारक: आपूर्ति बनाम मांग का असंतुलन

आयाम (Dimension)	संरचनात्मक बाधा (Structural Bottleneck)	युवाओं पर मुख्य प्रभाव (Impact on Youth)
आपूर्ति पक्ष (Supply-Side)	पुराने व्यावसायिक पाठ्यक्रम; 'ब्लू-कॉलर' नौकरियों से जुड़ा सामाजिक पूर्वाग्रह	स्नातकों में कार्यस्थल के व्यावहारिक कौशल का अभाव
मांग पक्ष (Demand-Side)	पूंजी-गहन एवं सेवा-आधारित आर्थिक विकास, जिसमें श्रम समावेशन कम है	औपचारिक स्तर पर शुरुआती स्तर (entry-level) नौकरियों का अपर्याप्त सृजन
संस्थागत (Institutional)	कमजोर उद्योग-अकादमिक तालमेल और कॉरपोरेट क्षेत्र द्वारा शिक्षता को कम अपनाना	क्लासरूम से कार्यस्थल के बीच प्रत्यक्ष सेतु (bridge) की कमी
सूचना संबंधी (Information)	खंडित करियर परामर्श और स्थानीय श्रम बाजार डेटा का अभाव	युवा ऐसी गैर-व्यावहारिक डिग्रियों की ओर भागते हैं जिनकी मांग घट चुकी है

► नीति आयोग की प्रमुख सिफारिशों का विश्लेषण

- **प्रारंभिक स्कूली स्तर पर व्यावसायिक कौशल:** बुनियादी तकनीकी कौशल विकसित करने और शारीरिक श्रम वाले पेशों से जुड़े सामाजिक कलंक को समाप्त करने के लिए कक्षा 6 से 12 तक व्यावसायिक प्रशिक्षण को शामिल करना।
- **उच्च-विकास और उभरते (सनराइज) क्षेत्रों को लक्षित करना:** पॉलिटेक्निक और व्यावसायिक पाठ्यक्रमों को इलेक्ट्रिक वाहन (EV), ग्रीन हाइड्रोजन, नवीकरणीय ऊर्जा और AI-सक्षम लॉजिस्टिक्स जैसे उभरते क्षेत्रों के अनुकूल बनाना।
- **दोहरी-शिक्षा शिक्षता (Dual-Education Apprenticeships) का विस्तार:** जर्मनी जैसी व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रणालियों की तर्ज पर राष्ट्रीय शिक्षता संवर्धन योजना (NAPS) के तहत संरचित शिक्षता को मुख्यधारा में लाना।

► संतुलित मूल्यांकन: कौशल निर्माण बनाम रोजगार सृजन

- **आपूर्ति-पक्ष का तर्क:** कौशल विकास सीधे तौर पर श्रम उत्पादकता बढ़ाता है, मानव पूंजी को सुदृढ़ करता है और कार्यबल को वैश्विक तकनीकी परिवर्तनों के अनुकूल बनाता है।
- **मांग-पक्ष की वास्तविकता:** यदि व्यापक अर्थव्यवस्था श्रम की मांग उत्पन्न करने में विफल रहती है, तो केवल कौशल विकास बेरोजगारी को हल नहीं कर सकता। औद्योगिक विस्तार के बिना लाखों युवाओं को प्रशिक्षित करने से केवल अकुशल NEET युवा 'शिक्षित, कुशल बेरोजगार युवाओं' में तब्दील हो जाएंगे।
- **नीतिगत अनिवार्यता:** मानव पूंजी हस्तक्षेपों (कौशल, शिक्षा) को औद्योगिक नीति (विनिर्माण वृद्धि, व्यापार सुगमता, श्रम सुधार) के साथ मिलकर काम करना होगा।

► आगे की राह

- **श्रम-गहन विनिर्माण को पुनर्जीवित करना:** कपड़ा, चमड़ा, फुटवियर, खाद्य प्रसंस्करण और निर्माण जैसे श्रम-गहन क्षेत्रों में उत्पादन-संबद्ध प्रोत्साहन (PLI) का विस्तार करना।
- **विश्वविद्यालयी स्तर पर अनिवार्य शिक्षता:** सामान्य डिग्री पाठ्यक्रमों (BA, B.Com, B.Sc) में 6-12 महीने की अनिवार्य औद्योगिक इंटरशिप को शामिल करना, ताकि स्नातक होने से पहले ही कार्यस्थल की तैयारी सुनिश्चित हो सके।
- **महिलाओं के लिए लक्षित पहल:** स्थानीय कौशल केंद्र स्थापित करना, सुरक्षित सार्वजनिक परिवहन प्रदान करना, किफायती सार्वजनिक क्रेच (शिशु-गृह) सुविधाओं का विस्तार करना और महिला NEET युवाओं को सेवतन कार्य से जोड़ने के लिए सूक्ष्म-उद्यमिता को बढ़ावा देना।
- **सरकारी भर्ती परीक्षाओं की विश्वसनीयता सुनिश्चित करना:** परीक्षा में देरी और पेपर लीक को रोकने के लिए राज्य और राष्ट्रीय भर्ती आयोगों में सख्त डिजिटल मानक और प्रशासनिक सुधार लागू करना।
- **जिला कौशल मैपिंग (District Skill Mapping):** स्थानीय औद्योगिक जरूरतों को रियल-टाइम में ट्रैक करने के लिए जिला कौशल समितियों (DSCs) का उपयोग करना, जिससे ITI और पॉलिटेक्निक की क्षमता को आसपास के उद्योगों की मांग से सीधे जोड़ा जा सके।

► निष्कर्ष

भारत के लगभग 7 से 9 करोड़ NEET युवाओं को एक उत्पादक आर्थिक इंजन में बदलना 'विकसित भारत@2047' के दृष्टिकोण को साकार करने के लिए अत्यंत आवश्यक है। इसके लिए एक संतुलित रणनीति की दरकार है, जो पारंपरिक और उभरते दोनों उद्योगों में आपूर्ति-पक्ष के कौशल सुधारों और मांग-पक्ष के रोजगार सृजन के बीच के अंतर को पाट सके।

► मानक प्रस्तावना (Introduction)

भारत की लगभग 28 वर्ष की औसत आयु इसे विश्व के सबसे बड़े जनसांख्यिकीय लाभांश (Demographic Dividend) वाले देशों में स्थापित करती है। हालांकि, नीति आयोग की रिपोर्ट 'रीइमेजनिंग स्किलिंग फॉर विकसित भारत@2047' के अनुसार, 15-29 आयु वर्ग के लगभग 7 करोड़ युवाओं का NEET श्रेणी में होना एक गंभीर संरचनात्मक विसंगति को दर्शाता है। डिग्री-केंद्रित सैद्धांतिक शिक्षा, कार्यस्थल प्रासंगिकता की कमी और श्रम-समावेशी विनिर्माण की सुस्ती के कारण उत्पन्न यह संकट चेतावनी देता है कि त्वरित नीतिगत सुधारों के अभाव में यह लाभांश सामाजिक-आर्थिक 'जनसांख्यिकीय दायित्व' में तब्दील हो सकता है।

► मानक निष्कर्ष (Conclusion)

अतः भारत की कौशल चुनौती को केवल प्रशिक्षण लक्ष्यों की संख्या से नहीं, बल्कि 'रोजगार योग्यता और जवाबदेही' (Accountability) के मापदंडों पर परखा जाना चाहिए। इसके लिए शांता कुमार और कस्तूररंगन समितियों की भावना के अनुरूप NEP 2020 के व्यावसायिक घटकों का प्रभावी क्रियान्वयन, जर्मन मॉडल पर आधारित दोहरी शिक्षता (Dual Apprenticeship), और श्रम-गहन क्षेत्रों को PLI से जोड़ना आवश्यक है। महिला कार्यबल की बाधाओं को दूर करते हुए जिला-स्तरीय कौशल मैपिंग से स्थानीय मांग को जोड़े बिना 'विकसित भारत@2047' का समावेशी आर्थिक लक्ष्य अधूरा रहेगा।

🔥 मुख्य परीक्षा अग्रसार प्रश्न

"भारत की कौशल विकास संबंधी चुनौती इरादे की नहीं, बल्कि जवाबदेही की विफलता है।" भारत के कौशल पारिस्थितिकी तंत्र में मौजूद संस्थागत कमजोरियों का विश्लेषण कीजिए। श्रम-बाजार की दक्षता पर इनके प्रभावों का आकलन कीजिए तथा जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए सुधारों के सुझाव दीजिए।

3. यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (UPI)

(विषय: अर्थव्यवस्था (GS Paper III))

► संदर्भ

→ यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (UPI) ने भारत की डिजिटल अर्थव्यवस्था की रीढ़ के रूप में अपनी भूमिका मजबूत की है, जिसने अकेले **जुलाई 2026** में लगभग **₹30 लाख करोड़** मूल्य के **2,366 करोड़ लेनदेन** संसाधित किए।

2,366 करोड़

मासिक लेनदेन की संख्या
(अकेले जुलाई 2026 में)

₹30 लाख करोड़

कुल संसाधित लेनदेन मूल्य
(मासिक रिकॉर्ड)

730+ बैंक

सक्रिय भागीदार बैंक
(2016 में 21 बैंकों से बढ़कर)

► परिचय: यह क्या है?

UPI एक उन्नत, वास्तविक समय (real-time) का अंतर-संचालनीय (interoperable) भुगतान प्रणाली ढांचा है जो मोबाइल एप्लिकेशन के माध्यम से सीधे त्वरित अंतर-बैंक फंड ट्रांसफर को सक्षम बनाता है। एक ओपन-आर्किटेक्चर डिजिटल सार्वजनिक बुनियादी ढांचे के रूप में निर्मित, यह उपयोगकर्ता के जटिल बैंक विवरण को एक सरल, सुरक्षित वर्चुअल भुगतान उपनाम (**वर्चुअल पेमेंट एड्रेस या UPI ID**) में परिवर्तित करता है।

► विकासकर्ता एवं शुभारंभ

→ विकासकर्ता: **भारतीय राष्ट्रीय भुगतान निगम (NPCI)**

→ **लॉन्च तिथि:** तत्कालीन आरबीआई गवर्नर रघुराम राजन के कार्यकाल में **अप्रैल 2016** में 21 बैंकों के साथ पायलट प्रोजेक्ट के रूप में शुरू किया गया, जो वर्तमान में **730 से अधिक बैंकों** तक विस्तारित हो चुका है।

→ **उद्देश्य:** एक सहज, इंटरऑपरेबल, कैंशलेस डिजिटल भुगतान पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करना, जो खुदरा लेनदेन को सरल बनाए, बैंकिंग पहुंच से बाहर की आबादी को औपचारिक डिजिटल वित्त में लाए, और व्यक्ति-से-व्यक्ति (P2P) एवं व्यक्ति-से-व्यापारी (P2M) भुगतानों को घर्षण-मुक्त बनाए।

► यह कैसे काम करता है? (कार्यप्रणाली)

चरण 1 **वर्चुअल उपनाम से शुरुआत:** प्रेषक प्राप्तकर्ता की UPI ID (जैसे, shankar@flutebank) दर्ज करता है या TPAP (जैसे Google Pay/PhonePe) पर QR कोड स्कैन करता है।

चरण 2 **उपयोगकर्ता प्रमाणीकरण:** TPAP लेनदेन टोकन NPCI स्विच को भेजता है, जो प्रेषक को सुरक्षित एन्क्रिप्टेड लाइब्रेरी पर 4/6-अंकों का UPI पिन दर्ज करने का संकेत देता है।

चरण 3 **CBS सत्यापन:** प्रेषक बैंक (Remitter Bank) प्रमाणीकरण, खाता वैधता, शेष राशि, दैनिक लेनदेन सीमा और धोखाधड़ी-रोधी मापदंडों की जांच करता है।

चरण 4 **स्विचिंग और रूटिंग:** प्रेषक बैंक द्वारा राशि डेबिट मंजूरी के बाद, NPCI स्विच लाभार्थी के बैंक (Beneficiary Bank) को निर्देश भेजता है।

चरण 5 **रियल-टाइम सेटलमेंट और पुष्टि:** प्रेषक खाते से डेबिट, लाभार्थी बैंक तुरंत खाते में क्रेडिट करता है, और NPCI दोनों उपयोगकर्ताओं के मोबाइल ऐप पर तत्काल पुष्टि भेजता है।

► UPI की प्रमुख विशेषताएं

- **वर्चुअल पेमेंट एड्रेस (VPA/UPI ID):** संवेदनशील वित्तीय डेटा (खाता संख्या, IFSC) साझा करने की आवश्यकता समाप्त करता है।
- **24/7/365 रियल-टाइम निपटान:** IMPS मेंसेजिंग बैंकबोन पर निर्मित, लगातार निर्बाध कार्य।
- **सिंगल ऐप मल्टी-बैंकिंग:** एक ही UPI ऐप विभिन्न संस्थानों के कई खातों को जोड़ सकता है।

- **टू-फैक्टर ऑथेंटिकेशन (2FA):** डिवाइस बाइंडिंग (सिम कार्ड पंजीकरण) और गुप्त UPI पिन से मजबूत सुरक्षा।
- **उन्नत क्षमताएं (UPI 2.0+):** ऑटोपे, पूर्व-स्वीकृत क्रेडिट लाइन, ओवरड्राफ्ट लिफ्टिंग, चालान सत्यापन, ऑफलाइन UPI लाइट, AI वॉयस भुगतान।

🔑 प्रीलिम्स पॉइंट्स (Prelims Key Takeaways)

- **NPCI:** 2008 में RBI और IBA द्वारा स्थापित, कंपनी अधिनियम 2013 की धारा 8 के तहत गैर-लाभकारी छाता संस्था।
- **वैश्विक उपस्थिति:** फ्रांस (एफिल टॉवर), सिंगापुर (PayNow लिफ्ट), UAE, नेपाल, भूटान, श्रीलंका और मॉरीशस।